#९४. अखण्डता, सार्वभौमता क्रम

२०-०७-२०१३

अखण्डता, मानव परम्परा में सर्वाधिक मानव अथवा सर्वमानव समझदार होने से, प्रमाणित होने से अखण्ड समाज का संज्ञा बनता है, तब तक समुदाय चेतना में ही जीते हैं| समुदाय चेतना, जीव चेतना ही होता है| मानव जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया, उसमें सफल हो गया| सार्वभौमता, व्यवस्था के रूप में होता है| चारों अवस्था में संतुलन ही व्यवस्था है| अभी तक मानव जात शासन के अर्थ में जिया है| वह जीव चेतना में ही सीमित रहा| मानव, मानवत्व के साथ जीना ही चाहता है| भले ही अल्प संख्या में यह प्रवृत्ति है अभी| मानवता के साथ जीने में समझदारी प्रधान है| समझदारी केवल विकसित चेतना ही है| विकसित चेतना विधि से ही अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, व्यवहार-कार्य प्रमाण प्रमाणित होता है | यही मानव परम्परा का आधार है| अपने विचार से अभी तक समुदाय चेतना में जिया| कोई अच्छा जिया अपने नजरिया में, कोई खराब जिया| इसी आधार पर जातियों के नाम लेकर, परस्पर समुदाय संघर्ष और युद्ध में रत हो गये| फलस्वरूप मानव परम्परा ही बर्बाद हो गया अर्थात मानव जात इस धरती पर नहीं रहने का सम्भावना बढता गया| मानव इस धरती पर नहीं रहेगा, दूसरा धरती पर रहेगा, तभी भी अपराध ही करना है| दूसरा कोई रास्ता नहीं है|

अपराध का आधार जीव चेतना ही है| उसको पहचानने जायेंगे तो समुदाय चेतना ही है| समुदाय के आधार पर ही मानव हो करके परस्पर युद्ध की सम्भावना बनाए रहते हैं| इसे ऐसा भी समझा जा सकता है कि अनेक समुदाय के रूप में जीने के लिये बाध्य हो गया| समुदाय चेतना, जीव चेतना ही है| जीवों में अनेक जात हैं| अपने-अपने परम्परा बनाकर रखा है | उनमें कोई परिवर्तन नहीं है| आदि काल से अर्थात जंगल के युग से कुत्ता, बिल्ली, बाघ, गाय, भालू ये सब अपने समुदाय में परम्परा के रूप में होते हुये आचरण को बदला नहीं| भुनगी से हाथी तक, मिट्टी से लेकर जीवों तक आचरण निश्चित है| मानव का आचरण निश्चित नहीं हुआ| जंगल युग से जीने का स्वीकृति है| मानव इतना लंबे समय में अपने आचरण को पहचाना नहीं, न उसको बनाए रखा| इस क्रम में मानव परेशानियों को मोलता गया| परेशानियों में दो भाग, भ्रम और अपराध अपनाना पड़ा| भ्रम विधि से उन्माद त्रय को अपनाया|

अपराध विधि से संघर्ष और युद्ध को अपनाया| मानव परम्परा का ये हसरत हुआ| इसमें भी आचरण निश्चित नहीं है | हर दम बदलता रहा| इसमें कोई व्यवस्था हो नहीं पाया| शासन में रहना हुआ| शासन कोई मानव का संतुष्टि नहीं है| मानव का संतुष्टि व्यवस्था में है| इसको ऐसा पहचाना जा सकता है कि हर मानव किसी परिवार में होता है| परिवार में हम व्यवस्था विधि से संतुष्ट होते हैं, शासन विधि से नहीं| यही क्रम शासन विधि तक पहुंचता है| हर समुदाय चेतना अपना एक समुदाय को बनाए रखा है| उसका एक संविधान होता है| संविधान को बनाए रखना सर्वोपरि माना| इस क्रम में मानव विवश होता ही गया| दूसरा भाषा से विवश हो करके अभी तक जिया| विवशता मानव का वांछित घटना नहीं है| विवशता विधि से जीकर समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकता| नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य को प्रमाणित कर नहीं सकता| स्वधन,स्वनारी/स्वपुरुष,दयापूर्ण कार्य-व्यवहार को प्रमाणित कर नहीं सकता| इन्हीं मूलभूत कमियों के कारण से मानव जात भ्रमित होना और अपराधी होना होता रहा| इसी को सर्वोपरि उपलब्धि मानता रहा| विकल्प के सामने जब इसका मूल्यांकन हुआ, तब पता चला ये दोनों भाग मानव अपेक्षित नहीं है| मानव का अपेक्षा

अखण्डता, सार्वभौमता ही है | अखण्डता, सार्वभौमता विधि से समझदारी को विकसित करना एक अवश्यम्भावी कार्य रहा है जो स्वयंस्फूर्त विधि से उत्पन्न हुआ अथवा उदय हुआ घटना है | ऐसी घटना से प्राप्त विकल्प को अच्छी तरह से समझना आवश्यक है | विकल्प में ही अखण्डता का, सार्वभौमता का सिद्धांत, प्रक्रिया, फल-परिणाम की निरंतरता समझ में आता है | इस विधि से चलता हुआ मानव ही अपने आचरण में स्थिर होता है | दूसरा कोई विधि अभी तक तैयार नहीं हुआ |

मानव अपने आचरण को पहचाने बिना जीने से क्या फायदा? संख्या विधि से वृद्धि होना जीना नहीं हुआ | धन के आधार पर जीना नहीं हुआ | बल के आधार पर जीना नहीं हुआ | इसमें ज्यादा कम वाला दोष रहा | इसको जीव चेतना में भी जीवों के साथ हम परीक्षण कर सकते हैं | विकल्प विधि से यह पता चला कि चारों अवस्था में संतुलन आवश्यक है | संतुलन का मतलब अपने-अपने आचरण में निरंतरता को बनाए रखें | व्यवस्था का आधार यही है | सबसे पहले मानव को ही अपना आचरण को समझना पड़ेगा | मानव अपने आचरण में स्थिर होने के बाद ही चारों अवस्थाओं में संतुलन की बात आता है | इसके पहले कोई संतुलन होने की सम्भावना ही नहीं | इससे ये पता चलता है कि इस घटना की आवश्यकता रही | अर्थात विकल्प रूपी घटना की आवश्यकता रही | मानव सम्मुख यह उदय हो चुका है | इसको परीक्षण किया जा सकता है, जाँच विधि से | हर व्यक्ति में जांचने का गुण है | यही ज्ञानावस्था की विशेषता है | इसी क्रम में जाँच विधि से जब हम पाते हैं, विकसित चेतना में आचरण समानता, इसके मूल में मानव धारणा एक, मानव जाति एक होना समझ में आता है |

इसके आधार पर आचरण करने से ही अखण्डता,सार्वभौमता में भागीदारी होती है | इसके मूल में समझदारी प्रधान है | मानव जात में ही समझदारी का पहचान है | सर्वाधिक मानव अथवा सर्वाधिक संख्या में मानव समझने से, विकल्प रूप में प्रस्तुत हुई वस्तु को समझने से समझदारी होता है | दूसरा कोई विधि से समझदारी का आधार, सूत्र व्याख्या नहीं बन | इस क्रम से मानव विकसित हो सकता है | विकल्प विधि से समझदारी को समझना, प्रमाणित हो पाना यदि सम्भव हो सकता है तब इस पर प्रयत्न किया जाना आवश्यक है | इसमें यही एक तर्क रहा है | मानव के बाद और कोई में, सृष्टि में और कोई परिवर्तन होगा कि नहीं? यदि मानव समझदार नहीं होगा, अखण्डता, सार्वभौमता को प्रमाणित नहीं करेगा तब धरती से भागना सम्भावना जैसा लगता है | धरती से भाग कर कहाँ जाना है यह अभी तक निर्णय नहीं हुआ |

यदि निर्णय हुआ मान भी लिया जाय- चन्द्रलोक, मंगल लोक | पैसे से सम्बंधित है, पहुँचने के विचार से सम्बंधित नहीं है | इस विधि से मानव अपने निग्रह बिंदु को रखा है | इससे मुक्ति देने के लिये विकल्प प्रस्तुत है | मानव समझदार बने, प्रमाणित हो जाए, अखण्डता, सार्वभौमता को प्राप्त कर ले जिसमें मानव धर्म एक, मानव जाति एक होना स्वीकार हुआ हो:, उसी स्थिति में मानव इस धरती को बचा सकता है | धरती को बचाने का मतलब, धरती उर्वरक स्थिति में रहे और समाधान, समृद्धिपूर्वक हर व्यक्ति जी सके | इस क्रम में मानव अथवा इसी क्रम में मानव, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना रूपी जागृत चेतना का प्रमाण हो सकता है | इस पर यदि विश्वास होता है, जी के देखना ही एकमात्र रास्ता है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज